२०२१-२२
शास्त्री परीक्षा
खण्ड- द्वितीय, अधिसत्र- प्रथम
विषय- पालि, पत्र- सप्तम

समयः ३½ घण्टे
पूर्णांक - ७०

निर्देशः एक पंक्ति में १० शब्द तथा प्रत्येक पृष्ठ में ८ पंक्तियों में लेखन अपेक्षित है ।

खण्ड-१

१. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

१०×२=२०

क. "सुत्तनिपाते महामङ्गलसुत्तं"—अत्तनो सद्देन पालियं लिखथ।

अथवा

"तं जञ्ञा वसलो इति"—सुत्तनिपात में आगत इस पद की व्याख्या करें।

ख. भारद्वाज माणवक और वासेट्ठ के बीच विवाद का निराकरण भगवान बुद्ध ने कैसे किया?

अथवा

पब्बज्जासुत्त में किसके पब्बज्जा की बात की गयी है?भगवान ने राजा बिम्बिसार को क्या संदेश दिया?

खण्ड-२

२. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखें—

५×३=१५

क- गृहस्थ और अनगारिक विषयक शैल के प्रश्न
ख- सर्प की उपमा और भिक्षु
ग- धनिय गोप को बुद्ध का उपदेश
घ- कोचञ्ञो अत्तना पियतरो
ङ- संघभेद
च- थेरवाद

खण्ड-३

३-निम्नलिखित गाथाओं की सप्रसंग व्याख्या करे—

७.५×२=१५

क- सिखी यथा नीलगीवो विहङ्गमो,
हंसस्स नोपेति जवं कुदाचनं.
एवं गिही नानुकरोति भिक्खुनो,
मुनिनो विवित्तस्स वनम्हि झायतोति.

अथवा

"यो तिण्णकथंकथो विसल्लो, निब्बानाभिरतो अनानुगिद्धो.

लोकस्स सदेवकस्स नेता, तादिं मग्गजिनं वदन्ति बुद्धा.

ख- यो नीवरणे पहाय पञ्च, अनिघो तिण्णकथंकथो विसल्लो.

सो भिक्खु जहाति ओरपारं, उरगो जिण्णमिवत्तचं पुराणं.

अथवा

“मदा हि पापानि करोन्ति बाला, कारेन्ति चञ्ञेपि जने पमत्ते.

एतं अपुञ्ञायतनं विवज्जये, उम्मादनं मोहनं बालकन्तं.

४- **निम्नलिखित का अनुवाद करें—**

१०

अथ खो सेलस्स ब्राह्मणस्स एतदहोसि — “समन्नागतो खो समणो गोतमो द्वत्तिंसमहापुरिसलक्खणेहि परिपुण्णेहि, नो अपुरिपुण्णेहि. नो च खो नं जानामि बुद्धो वा नो वा. सुतं खो पन मेतं ब्राह्मणानं वुड्ढानं महल्लकानं आचरियपाचरियानं भासमानानं — ‘ये ते भवन्ति अरहन्तो सम्मासम्बुद्धा, ते सके वण्णे भञ्ञमाने अत्तानं पातुकरोन्ती’ति. यंनूनाहं समणं गोतमं सम्मुखा सारुप्पाहि गाथाहि अभित्थवेय्यन्”ति. अथ खो सेलो ब्राह्मणो भगवन्तं सम्मुखा सारुप्पाहि गाथाहि अभित्थवि।

अथवा

अथ खो सेलस्स ब्राह्मणस्स एतदहोसि — “घोसोपि खो एसो दुल्लभो लोकस्मिं यदिदं बुद्धोति. आगतानि खो पन म्हाकं मन्तेसु द्वत्तिंसमहापुरिसलक्खणानि, येहि समन्नागतस्स महापुरिसस्स द्वेव गतियो भवन्ति अनञ्ञा. सचे अगारं अज्झावसति राजा होति चक्कवत्ति धम्मिको धम्मरा

जा चातुरन्तो विजितावी जनपदत्थावरियप्पत्तो सत्तरतनस मन्नागतो. तस्सिमानि सत्त रतनानि भवन्ति, सेय्यथिदं — चक्करतनं, हत्थिरतनं, अस्सरतनं, मणिरतनं, इत्थिरतनं, गहपतिरतनं, परिणायकरतनमेव सत्तमं. परोसहस्सं खो प नस्स पुत्ता भवन्ति सूरा वीरङ्गरूपा परसेनप्पमद्दना. सो इ मं पथविं सागरपरियन्तं अदण्डेन असत्थेन धम्मेन अ भिविजिय अज्झावसति. सचे खो पन अगारस्मा अनगा रियं पब्बजति, अरहं होति सम्मासम्बुद्धो लोके विवट्टच्छ दो. कहं पन, भो केणिय, एतरहि सो भवं गोतमो विहरति अरहं सम्मासम्बुद्धो”ति?

खण्ड-४

५. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक शब्द या एक वाक्य मे अपेक्षित है। सभी के अंक समान है।

१×१० =१०

क- सुत्तनिपात के कौन से अध्याय प्राचीनतम माने जाते हैं?

ख- महामंगल सुत्त में भगवान ने कितने मंगल बताये हैं?

ग- बुद्ध के गुणों को पालि में लिखें।

घ- *“अत्त सम्मा पणिधि च”*—का अनुवाद कीजिए।

ङ- *“उसभोपि गवम्पतीध अत्थि, अथ चे पत्थयसी पवस्स देव”*—यह कथन किसने किसको कहा ?

च- *‘धम्मसाकच्छा’* का क्या अर्थ है?

छ- *"यो वा अगारा अनगारमेति*'— 'अगारा' शब्द में कौन सी विभक्ति
है।

ज- "*पहातब्बं पहीनं मे, तस्मा बुद्धोस्मि ब्राह्मण*'— अनुवाद करें।

झ- '*नीवरण* कितने हैं, उनके नाम लिखें।

ञ- '*आमन्तेसि* शब्द का पच्चुपन्न काल का मध्यम पुरुष एकवचन में
रूप लिखें।

****